बी. एड. प्रथम वर्ष
सत्र - 2019 -2020/2021
विषय - सामाजिक विज्ञान शिक्षण
यूनिट - 2 (a)

प्रकरण - शिक्षक के गुण

व्याख्यान सं. - 10

डॉ. अमोद कुमार सिन्हा
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
AND कॉलेज,
शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

एक शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है। यह कोई सूत्र-वाक्य नहीं है। हम किसी भी महान दार्शनिक, राष्ट्र-निर्माता, वैज्ञानिक आदि का नाम लें, उनके जीवन में उनके गुरु की शिक्षा स्वतः परिलक्षित हो जाएगी। यही कारण है की हर कोई शिक्षक नहीं बन सकता। एक शिक्षक बनना उत्तरदायित्व भरा कार्य है। शिक्षण का कार्य सफलतापूर्वक संपन्न करने के लिए एक व्यक्ति में निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है:-

1. **एक उत्तम अधिगमकर्ता -** एक शिक्षक छात्रों को अधिगम करने में तभी सफल हो पायेगा जब वो स्वयं एक अच्छा अधिगमकर्ता हो। इससे वह खुद के विषयों में होने वाले नए ज्ञान एवं शोधों को अपने अध्यापन को आधुनिक एवं उत्तम बना सकते हैं।

2. **विषयवस्तु का पूर्ण ज्ञान -** एक आदर्श शिक्षक को अपने क्षेत्र के विषय का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। पूर्ण ज्ञान नहीं होने पर वह विद्यार्थियों की विषय संबंधी समस्याओं का समाधान नहीं कर पाएगा जिससे छात्र उसका आदर सम्मान नहीं करेंगे और न ही उसे आत्म संतुष्टि हो पाएगी। साथ ही उसे सम्बंधित विषयों विषयों का ज्ञान भी होना चाहिए।

3. **विभिन्न शिक्षण विधियों एवं कौशलों का ज्ञान -** छात्र शिक्षक को अच्छी तरह से समझ सके इसके लिए उसे छात्रों के स्तर अनुसार एवं विषय की प्रकृति अनुसार उचित शिक्षण विधि का प्रयोग करना चाहिए। जैसे छोटे बालको के लिए खेल विधि,प्रदर्शन विधि और कहानी विधि का प्रयोग प्रभावशाली रहता है तथा उच्च कक्षाओं में व्याख्यान प्रयोगशाला प्रयोगात्मक विधि उपयुक्त रहती है।

4. **सम्प्रेषण सम्बन्धी दक्षता-** ऐसा भी देखा गया है की विषयों का पूर्ण ज्ञान होने पर भी कुछ शिक्षक विद्यार्थियों को अधिगम प्रदान करने में पीछे रह जाते हैं एवं उनसे काम ज्ञानी शिक्षक छात्रों के बीच लोकप्रिय हो जाते हैं। इसका एक ही कारण है , दोनों शिक्षकों के सम्प्रेषण कौशल का अंतर।

5. **सहायक सामग्री का प्रयोग -** वर्तमान समय में विषय वस्तु की जटिलता कि समाप्ति की दृष्टि से अध्यापन में शिक्षा तकनीकी के साधनों का प्रयोग किया जा लगा है एक अच्छा अध्यापक वही है जो छात्रों के स्तर, उनकी योग्यता एवं क्षमता तथा विषय-वस्तु की प्रकृति को ध्यान में रखकर वस्तु को सरल और रुचिकर बनाने की दृष्टि से समुचित शिक्षण सहायक सामग्री का निर्माण एवं प्रयोग करें।

6. **मनोविज्ञान का ज्ञान -** एक शिक्षक उसी स्थिति मे बालको की समस्याओं का समाधान कर सकता है जब वह उन से परिचित हो और समस्याओं के संबंध में जानने के लिए शिक्षक को मनोविज्ञान का ज्ञान होना आवश्यक है। मनोविज्ञान का ध्यान होने पर ही शिक्षक बालक की रूचि योगिता क्षमता बुद्धि आदि को समझ सकता है और छात्रों को उनके करियर बनाने में मदद कर सकते है, उनकी कमज़ोरी और ताक़त से उन्हें अवगत करा सकते हैं।

7. **मूल्यांकन सम्बन्धी दक्षता -** एक अच्छे शिखक को आधुनकीक मूल्यांकन विधियों का पता होता होना चाहिए। मुल्यांकन करते समय प्रत्येक शिक्षक को प्रश्न, उनके प्रकार, एवं मापन के उद्देश्य से भी अवगत होना चाहिए। केवल बुद्धि परीक्षण से व्यक्तित्व का मापन नहीं हो सकता।

8. **मूलभूत मूल्यों के प्रति पर्त्रिबद्धता -** आजकल समाज के प्रत्येक क्षेत्र में मूल्यों का ह्रास हो रहा है। हर तरफ घोटाला, घूसखोरी, बईमानी, यौन शोषण जैसी गन्दगी हमारे समाज में तेजी से फ़ैल रही है। ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, सेवाभाव, आदि सद्गुणों का आभाव हो रहा है। ऐसे समय में के अच्छे शिक्षक को प्रयक्ष आय अप्रत्यक्ष रूप से छात्रों में सद्गुणों का सम्प्रेषण करना चाहिए। ज़रूरी यह है की प्रथमदृष्टया तो इन सद्गुणों को आत्मसात करे ताकि छात्र बभी उनका अनुकरण करें।

9. **समय का पाबंद -** अच्छे अध्यापक का एक महत्वपूर्ण गुण उसका समय के प्रति पाबंद होना है।वह समय पर विद्यालय में जाएं,प्रार्थना सभा में उपस्थित हो तथा कालांश प्रारंभ होते ही कक्षा में जाएं और कालांश समाप्ति के पूर्व क्लास छोड़े अध्यापक यदि समय का पाबंद नहीं है तो उसके विद्यार्थी भी समय के पाबंद नहीं हो सकते।

10. **वेशभूषा -** टीचर का व्यक्तित्व प्रभावशाली होने के लिए उसका बाहरी स्वरूप अध्यापक के सम्मान ही होना आवश्यक है। अध्यापक को साफ सुथरी प्रेस किये हुए तथा उचित कपड़े पहने चाहिए। बालों को ढंग से सँवारकर कक्षा में जाना चाहिए। इससे शिक्षार्थी के ऊपर अच्छा प्रभाव पड़ता है।